Title: Requests not to include the area of Uddham Singh Nagar in the proposed seperate Uttarakhand State.

प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (पटियाला) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन में बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न उठाकर सारे सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं और मुझे उम्मीद है कि मेरे इस विषय का सारा हाउस, इस हाउस के सभी राजनीतिक दल समर्थन करेंगे क्योंकि यह विषय मानवाधिकारों से संबंधित है और लाखों लोगों की भावनाएं इससे प्रदर्शित होती हैं।

अध्यक्ष महोदय, भारत सरकार का प्रस्ताव है कि उत्तर प्रदेश के पहाड़ी अंचल यानी उत्तरांचल को मिलाकर एक अलग राज्य उत्तराखंड बनाया जाए। उत्तरांचल द्वारा प्रदेश की जो बाउंड्रीज बनाई गई हैं और जो क्षेत्र मार्क किया गया है, उसमें नौ जिले मार्क किए गए हैं। उनमें से एक ऊधम सिंह नगर के नाम से भी जाना जाता है। मेरा निवेदन है कि ऊधम सिंह नगर में जो लोग रहते हैं उनमें से बहुत सारे लोग पंजाब और हरियाणा से जाकर बस गए हैं। बहुत सारे बंगाल के लोग हैं जौ वहां जाकर बस गए हैं। उनमें से बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं जो १९४७ के बटवारे के समय से वहां रह रहे हैं और उन्होंने जंगल को साफ करके खेती योग्य जमीन तैयार की है। उनकी बोली, भाषा, रहन-सहन और खान-पान पहाड़ी क्षेत्र से बिलकुल नहीं मिलता। उनका सभी व्यवहार बिलकुल मैदानी भागों जैसा है।

अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री महोदय की विगत पंजाब यात्रा के दौरान एक प्रतिनिधि मंडल उनसे अमृतसर में मिला था और शिरोमणि अकाली दल की ओर से भी इस बारे में आग्रह किया गया था कि उन्हें उत्तरांचल के साथ अलग राज्य में न मिलाया जाए। मैं आपके माध्यम से सदन के सभी सदस्यों और सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि इस प्रकार से किसी भी समुदाय की भावनाओं को न दबाया जाए और उनको किसी ऐसे प्रदेश के साथ न जोड़ा जाए जिससे उन्हें मुश्किल खड़ी हो जाए। वहां का जो लैंड सीलिंग एक्ट है, वह भी मैदानी भागों के साथ है। खुद उनकी बोली भी नहीं मिलती है। इसलिए मेरा आग्रह है कि ऊधम सिंह नगर के एरिया को उत्तरांचल में शामिल न करें। मेरी विनती है कि ऊधम सिंह नगर का मैदानी एरिया, जो भले ही नैनीताल कमिश्नरी के साथ जुड़ता हो, उसे बरेली कमिश्नरी के साथ जोड़ दें।

अध्यक्ष महोदय, हम उत्तरांचल या उत्तराखंड बनाने के विरोध में नहीं हैं। हम चाहते हैं लोगों की भावनाएं वहां इस प्रकार की हैं, तो उत्तराखंड बन जाए, लेकिन किसी खास क्षेत्र के लोगों को उसमें जबर्दस्ती शामिल होने के लिए बाध्य न किया जाए। अन्त में मेरा निवेदन है कि उसे मैदानी भागों के साथ रखा जाए।

... (व्यवधान)

">

श्री मोहन सिंह (देवरिया): अध्यक्ष महोदय, पंजाब के जो लोग उत्तरांचल में आते हैं, उनको अलग बन रहे राज्य उत्तराखंड में शामिल होने के लिए विवश न किया जाए। मेरा आग्रह है कि उनको मैदानी भाग की किसी कमिश्नरी में जोड़ दिया जाए या उन्हें अलग स्थान दे दिया जाए।

... (व्यवधान)

13.33 hrs. (Shri Raghuvansh Prasad singh in the Chair)

श्री मोहन सिंह (देवरिया): सभापति महोदय, ऊधम सिंह नगर की जितनी पंचायतें और तहसील स्तर की समितियां हैं उनकी ओर से आंदोलन चल रहा है कि उन्हें उत्तरांचल में शामिल न किया जाए। उसे उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के साथ रहने दिया जाए। हमारे मित्र श्री चन्दूमाजरा जी ने बहुत महत्वपूर्ण सवाल सदन के सामने रखा है। ऊधम सिंह नगर के लोगों की कंपोजीशन ऐसी है कि वहां की आबादी का उत्तरांचल के साथ कोई वास्ता नहीं है, लेकिन उसे जबर्दस्ती उत्तराखंड में धकेला जा रहा है। ... (व्यवधान)

">

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूरी, एवीएसएम : सभापति महोदय, पंजाब और हरियाणा में चार-पांच लाख की संख्या में उ.प्र. से जाकर लोग बस जाएं, तो क्या उन्हें अलग स्थान दे दिया जाएगा, या उन्हें पंजाब से अलग कर दिया जाएगा? मेरे माननीय मित्र एक ऐसे गलत सिद्धान्त को यहां प्रतिपादित करने का प्रयास कर रहे हैं जो न प्रदेश और न ही देश के हित में है। मुझे उनके इस बयान पर बहुत आश्चर्य है। ... (व्यवधान)

श्री मोहन सिंह : आप पूरे उत्तर प्रदेश को उत्तराखंड में धकेल देना चाहते हैं, इसलिए आपको तो आश्चर्य होगा ही।

... (व्यवधान)

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूरी, एवीएसएम : सभापति महोदय, बहुत गलत नीति और सिद्धान्त को स्वीकार करने का आग्रह किया जा रहा है जो देश के हित में कदापि नहीं हो सकता है।

... (व्यवधान)

प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा : सभापति महोदय, ऊधम सिंह नगर के ८३ प्रतिशत लोगों ने इस बारे में लिखकर भेजा है कि उन्हें उत्तरांचल में शामिल नहीं किया जाए। ... (व्यवधान)

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूरी, एवीएसएम : सभापति महोदय, अगर चंडीगढ़ या अंबाला में किसी दूसरे प्रदेश के चार-पांच लाख लोग जाकर बस जाएं, तो क्या उन्हें उस प्रदेश से अलग कर दिया जाएगा?

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : नहीं, नहीं। आप बैठिए। सदन में शांति बनाए रखी जाए।